॥ क्या भरोसा है इस जिन्दगी का ॥

॥ *दो बातन को भूल मत जो चाहे कल्याण । नारायण एक मोत को दुजो श्री भगवान* ॥

क्या भरोसा है इस जिन्दगी का । साथ देती नही ये किसी का ॥
सांस रुक जायेगी चलते चलते । शम्मा बुझ जायेगी जलते जलते ॥
क्या भरोसा है ...

१. चार दिन की मिली जिन्दगानी हमे । चार दिन में ही करनी मुलाकात है ॥
राख बनकर के एकदिन तो उड़ जायेगे । उससे पहले ही प्रभू से मिलना तो है ॥
क्या भरोसा है ...

२. कोई तेरा नही सब है धोका यहां । काहे जिवन को यूही गवाता है तू ॥
राम को भूल बैठा है जिनके लिए । चार दिन मे ही तुझ को भूला देगे वो ॥
क्या भरोसा है ...

३. लेके कन्धे पे तुझको चले जायेंगे । तेरे अपने ही तुझको जला आयेंगे ॥
चार दिन के मुसाफिर तू सो क्यु रहा । अब तो करलो मोहोब्बत मेरे राम से ॥
क्या भरोसा है ...

४. तुलसी मींरा के जेसे तो हम हे नही । शबरी की जैसी भक्ति भी हम में नही ॥
फिर भी तेरे ही बालक है हम रामजी । हम को अपनी शरण में ले लो रामजी ॥

क्या भरोसा है इस जिन्दगी का । साथ देती नही ये किसी का ॥
सांस रुक जायेगी चलते चलते । शम्मा बुझ जायेगी जलते जलते ॥

Send corrections to hariomgroup@gmail.com